ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592636

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

विरूपाक्ष महादेव मन्दिर बिलपांक की दैव प्रतिमाओं का कलात्मक सौन्दर्य

राजेंद्र कुमार डोडिया [1]
[1] (शोधार्थी) शा. माधव महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

शोध-सारांश
यह मन्दिर पश्चिमी-मालवा क्षेत्र का सबसे बड़ा व गुर्जर चालुक्य शैली (परमार कला के समकालीन) का अप्रतिय उदाहरण है। यह मन्दिर पंचायतन शैली का है, भू-विन्यास में इस मन्दिर में एक वर्गाकार गर्भगृह, अन्तराल सभामण्डप तथा अर्ध मण्डप है, इस मन्दिर का गर्भगृह 5.20 मीटर वर्गाकार है। इस समय गर्भ गृह में पीतल की चादर से उपाच्छादित योनिपट्ट पर एक शिवलिंग प्रतिष्ठित है।

मुख्य शब्द – विरूपाक्ष, बिलपांक, दैव प्रतिमाओं

Cite This Article: राजेंद्र कुमार डोडिया. (2019). “विरूपाक्ष महादेव मन्दिर बिलपांक की दैव प्रतिमाओं का कलात्मक सौन्दर्य.” *International Journal of Research - Granthaalayah*, 7(11SE), 257-260. https://doi.org/10.5281/zenodo.3592636.

मन्दिर की स्थिति एवं परिचय-

विरूपाक्ष महादेव मन्दिर मध्य प्रदेश के रतलाम जिले के ग्राम बिलपांक में स्थित हैं, जो कि रतलाम के दक्षिण में 16 किलोमीटर दूर व रतलाम इन्दौर मुखय मार्ग से 02 किलोमीटर दूर व पूर्व की ओर बसा है।

यह लिंग अभी भग्नावस्था में है, गर्भगृह के अन्दर चार अलंकृत खम्बों से युक्त मण्डप है, इन स्तम्भों पर वितान अवस्थित है। वितान के निचले भाग में आठ टोढ़े हैं, जिनके ऊपर सुर-सुन्दरियों की मूर्तियाँ रही होंगी। वर्तमान में इन टोढ़ों पर कोई भी प्रतिभा स्थित नहीं है किन्तु गर्भगृह के उतरी टोढ़े के ऊपर दो ब्रेकेट हैं जिनमें से प्रत्येक पर सुर-सुन्दरियों की प्रतिमायें अवस्थित है जो कि भग्नावस्था में है।

गर्भगृह द्वार सप्तद्वाखाओं से सुसज्जित हैं। सभी शाखाओं के निचले भाग में शिखर मण्डित परिकर्मों के अन्दर देवों तथा परिचारकों की प्रतिमायें उत्कीर्ण है, अन्तराल की दक्षिणी भिति में चालुक्य राजा सिद्धराज जयसिंह का शिलालेख जड़ित है। सभामण्डप अत्यन्त भव्य है जिसमें की 110 मीटर ऊँचे विशाल स्तम्भ है। इनमें से प्रत्येक का अष्ट भुजाकार आधार है। सभा मण्डप के वितान का निचला भाग अष्ट भुजाकार है, इस वितान के 16 ब्रेकेट है जिसके ऊपर विविध मुद्राओं में सुर सुन्दरियाँ प्रदर्शित है। सभा मण्डप के सामने अर्ध मण्डप हैं, जिसका वितान छह वामन स्तम्भों पर अवस्थित है। यह वामन स्तम्भ रूपरेखा तथा सज्जा में सभा मण्डप के पार्शव कक्षों के वामन स्तम्भों के समान हैं।

मन्दिर का एक वैशिष्ट्य यह भी है कि उत्तर स्थित उसके सभागृह के गवाक्षों में एक स्तम्भ अन्य स्तम्भों से भिन्न व मौर्यकालीन स्तम्भ शीर्ष के समान बना हुआ है।

सभा मण्डप का वितान अर्धमण्डप गर्भगृह की द्वार देहरी सभी कुल अलंकृत है, अर्धमण्डप के पूर्वी द्वार पर स्थित दो विशाल प्रतिमायें हैं जो द्वार के दोनों ओर स्थित है जिसमें से एक शैव द्वारपाल व दूसरी प्रतिमा गणेश की है। इस मन्दिर के चारों कोनों में चार लघु मन्दिर स्थित है। इन सभी मन्दिरों में कलात्मक आलेखन, अलंकृत स्तम्भ व देव प्रतिमाओं का उत्कीर्णन है।

इतिहास -
मुखय मन्दिर से कुछ दूर मकान बनाने के लिए नींव खोदते समय ग्रामवासियों को 86 सेन्टीमीटर चौड़े और 61 सेन्टीमीटर ऊँचे प्रस्तर खण्ड पर उत्कीर्ण अण्हिलवाड़ के चौलुक्य शाशक सिद्धराज जय सिंह का विक्रम संवत् 1198 (1142 ईसवी) का एक अभिलेख प्राप्त हुआ था, जो मन्दिर के अन्तराल की दक्षिणी भित्ति में लगा दिया गया। आरम्भ के 'ऊँ नमः शिवाय' तथा अन्त के भित्ति वाले गद्य भाग को छोड़कर 30 पद्यों में संस्कृत भाषा निबद्ध यह अभिलेख 26 पंक्तियों में उत्कीर्ण है। ऐतिहासिक दृष्टि से विरूपाक्ष मन्दिर प्रशासित विदोश उल्लेखनीय है, प्रशासित में 30 श्लोक है। शिव स्तुति के बाद अन्य श्लोकों में चक्रवर्ती राजा सिद्धराज जयसिंह देव के पूर्वज का, पराक्रम का शौर्य वर्णन है, राजा सिद्धराज जयसिंह के वैभव व मन्दिर के वैभव व भगवान विरूपाक्ष की पुनः प्रतिष्ठा का तथा चक्रवर्ती कवि श्री पाल जैनाचार्य का वर्णन है, इस प्रशासित के अंतिम तीन श्लोकों से में लिखा है कि एक ही दिन में महाप्रबंध निर्माण करने वाले श्री सिद्धराज के माने हुए भाई श्री पाल नामक चक्रवर्ती कवि ने इस विस्तृत सुन्दर प्रशासित को बनाया। ये प्रसिद्ध मुनि श्रेष्ठ जिन भद्राचार्य जिनका दूसरा नाम राजवल्लभ था तथा जो साहित्य में प्रवीण एवं पंडितों में प्रधान थे। उन्होंने सिद्धराज की आज्ञा से स्पष्ट तथा शुद्ध अक्षरों में गंगाधर नामक ब्राह्मण से प्रशासित को लिखवाया। संवत् 1198 आषाढ़ सुदी 10 शुभ मंगल महा श्री।

एस.के. सिन्हा ने यह मत व्यक्त किया है कि इस मन्दिर का निर्माण दो कालों में हुआ। प्रथमतः परमार काल में यह मन्दिर 30 मीटर लम्बा (पूर्व से पश्चिम तक) तथा 18.05 मीटर चौड़ा (उत्तर से दक्षिण तक) था। इसका गर्भगृह पंचरथ योजना में बनाया गया जिसकी बाहरी नाप 15.05 मीटर की वर्गाकार थी। इससे जुड़ा हुआ अन्तराल व मण्डप था। इसके बाद जयसिंह सिद्धराज ने लगभग 100 वर्षों के बाद इस मन्दिर का पुनर्निर्माण करवाया। मण्डप को छोड़कर प्राचीन मन्दिर का निर्माण पुनः करवाया गया। गर्भगृह को छोटा बनाया गया और द्रिाखर को पिरामीड का आकार दिया गया मन्दिर का स्वरूप पंचायतन किया गया। सिन्हा यह भी मत व्य करते हैं कि मूल मन्दिर का निर्माण 105 ईसवी में परमार नरेद्रा भोज के समय में हुआ। किन्तु पुरातत्वीय दृष्टि से भी ऐसा सिद्ध नहीं होता कि मन्दिर का पुनर्निर्माण हुआ होगा। अतः यह मानना उचित होगा कि यह मन्दिर एक चालुक्य की देन है। अभिलेख में मन्दिर के जीर्णोद्धार की व्यवस्था का ही संकेत है न की वास्तव में पुनर्निर्माण का।

दैव प्रतिमायें -
मन्दिर में गणेश, पार्वती, उमा महेश्वर, नंदी के अतिरिक्त चामुण्डा, गंगा, यमुना, हरिहर, विष्णु, शिव तथा अन्तराल के वितान में ब्रह्मा-ब्रह्माणी, शिव-पार्वती तथा लक्ष्मी नारायण प्र प्रदर्शित हैं, वीणा बजाते हुए वीरभद्र हैं तथा ललितासन में विराजित विष्णु, लक्ष्मी, ब्राह्मी ऐन्द्री, वाराही एवं वैष्णवी इत्यादि मातृदेवियों की प्रतिमायें भी उत्कीर्ण है। सभा मण्डप के अलंकृत वितान के नीचे 16 ब्रेकेट में विभिन्न मुद्राओं में सुर सुन्दरियाँ उत्कीर्ण

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592636

हैं। इसके अतिरिक्त विद्याधर तथा मालाधरों की प्रतिमायें हैं नवगृह देवता कुबेर तथा सप्त मातृकाओं की प्रतिमायें भी उत्कीर्ण हैं।

दैव प्रतिमाओं के अतिरिक्त राजा परिचारिकायें साधु, युगल प्रतिमायें सूचक तथा पशु -पक्षी आलेखन इत्यादि का भी सुंदर उत्कीर्णन है।

प्रतिमाओं का कलात्मक सौन्दर्य -

माध्यम - सम्पुर्ण मन्दिर बलुआ पत्थर से निर्मित है तथा प्रतिमायें भी लाल भूरे बलुआ प्रत्तर से ही निर्मित है। कहीं-कहीं प्रतिमाओं के प्रत्तर के रंग एवं सतह में थोड़ा सा अंतर प्रतीत होता है। **मुद्रायें-** मन्दिर स्थित प्रतिमाओं में समपाद, भद्रासन, अभंग, त्रिभंग, अतिभंग एवं शाल भंजिका मुद्रायें उत्कीर्ण हैं। बैठी हुई प्रतिमाओं में पद्मासन, अर्धपदमासन ललितासन, महाराज लीलासन आदि मुद्रायें हैं। **आयुध-** प्रतिमाओं के हाथों में विभिन्न आयुध प्रदर्शित है जिनमें - पात्र, धनुष बाण, शंख, चंवर, त्रिषालु, पद्म, शाल वीणा तथा दर्पण, पाश, माला, माला सुत्र, पुस्तक, लेखनी, खड्ग, कलश, चक्र, सर्प, बंशी, छत एवं बीजपूरक इत्यादि है। **अलंकरण एवं आभूषण-** बाणभट्ट ने कादम्बरी में लिखा है उज्जयिनी (पश्चिम मालवा) की स्त्रियों के पैरों में मणिनूपुर, कमर में मेखला, कण्ठहार, कानों में कर्ण फूल पहनती है। मन्दिर स्थित प्रतिमाओं में कमरबंध मेखला, कर्णाभूषण, कलाइयों में वलय, अंगूठी नूपुर पैरों में कड़े, कर्णकुण्डल, करधनी, बाजूबंध मुकुट जूडामणी इत्यादि भिन्न-भिन्न प्रकार के आभूषण उत्कीर्ण है, प्रतिमायें देव कुलीकाओं में विराजित है जो कि बहुत ही अलंकृत है। अलंकृत बेले इत्यादि भी उत्कीर्ण है, लघु मंदिरों के स्तम्भ की अलंकरणों से युक्त है जिनमें कलश पुष्प बेलें इत्यादि बने हैं। **भावात्मक पक्ष-** यद्यपि मन्दिर की अधिकांश प्रतिमायें जर्जर एवं क्षरित अवस्था में है किन्तु जो प्रतिमायें अच्छी अवस्था में है, उनसे अनुमान लगाया जा सकता है कि प्राचीन समय में इन प्रतिमाओं का भाव पक्ष भी बहुत प्रबल रहा होगा।

मन्दिर के अन्तराल में स्थित स्तम्भों में अलंकृत परिक्रमों में सुरसुन्दरियों की सुन्दर प्रतिमायें उत्कीर्णित है, इनमें त्रिभंग मुद्रा में खड़ी सुरसुन्दरी जो अपने हाथों में आम्रगुच्छ तथा शिशु लिये हुए हैं, मुख किचिंत शिशु की और झुका हुआ है जिससे कि वात्सल्य के भाव परिलक्षित होते हैं। वस्त्र उतारते हुए एक सुन्दरी की भंगिमायें भी सुन्दर बन पड़ी है, बांये हाथ से दर्पण लिये त्रिभंग मुद्रा में सुन्दरी खड़ी है, इस प्रकार सभा मण्डप के वितान में 16 सुर सुन्दरियाँ है जो विभिनन सुंदर भाव भंगिमाओं में है जो कि विभिन्न वाद्य यंत्रों का वादन करते हुए है। महिषासुरमर्दिनी की प्रतिमा में वीरता की द्योतक भंगिमा व वेग है देवी चतुर्भजा है देवी का दायां चरण महिष पर स्थित है तथा वे पूर्ण वेग से शूल से महिष पर प्रहार कर रही है। इसी प्रकार शव पर आरूढ़ देवी चामुण्डा अतिभंग मुद्रा में स्थित है, इस प्रतिमा में दायां पैर व भुजायें भग्न अवस्था में है, देवी कृद्राकाय है जिनमें अस्थियाँ दिखाई दे रही है। मुख भाग किचिंत खुला हुआ है। इस मन्दिर में और भी अनेक प्रतिमायें हैं जो इस मन्दिर की कला एवं समृद्धि की गाथा कहते प्रतीत होती है।

विश्लेषणात्मक अध्ययन- मालवा में शैव धर्म का सदैव ही पर्याप्त प्रभाव रहा है। गुप्तोतर काल में शैव मत बहुत तेजी से विकसित हुआ और शैव मत की चौमुखी धूम रही यही कारण है कि यत्र पर्याप्त शैव मन्दिर निर्मित हुए जिनका पता विभिन्न पुरातत्वीय अवदोषों एवं अभिलेखों से चलता है।

विरूपाक्ष महादेव मन्दिर पश्चिम मालवा का सबसे बड़ा एवं कला समृद्धि से युक्त है। अन्य समीपस्थ मंदिरों में संखया की द्दष्टि से उतनी प्रतिमायें न ही है जितनी की विरूपाक्ष मन्दिर ये स्थित है। समीपस्थ मन्दिरों में धराड़ का महाकालेश्वर मन्दिर, बदनावर का बैजनाथ एवं नागचन्द्रेश्वर मन्दिर, झर का शिव मन्दिर तथा

उच्चानगढ़ माही नदी के किनारे बिखरे शैव मन्दिर के भग्नावशेष है ये सभी परमार कालीन है। विरूपाक्ष मन्दिर कुछ विषमतायें लिये हुये है जिनमें सभामण्डप में केवल पूर्व की ओर से प्रवेश कर सकते है, अन्य परमार कालीन मन्दिरों में ऐसा नहीं है, यह भी उल्लेखनीय है कि सभामण्डप के उत्तरी पार्शव कक्ष में एक स्तम्भ अन्य स्तम्भों से भिन्न है जिसे डॉ. वाकणकर ने मौर्यकालीन स्तम्भ माना है। किन्तु यह भी निर्विवाद है कि यह मन्दिर हमारी संस्कृति कला एवं प्राचीनता का द्योतक एवं पुरातत्वीय दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

सन्दर्भ

[1] Raizada Ajit, Art Archaeology and history of Ratlam, Sharda Prakashan, Page No. 103, 175.
[2] स्मारिका, विरूपाक्ष महादेव मन्दिर, बिलपांक, पृष्ठ संखया-18, 23-29।
[3] कंवल रामलाल, प्राचीन मालवा में मन्दिर वास्तुकला, स्वाति पब्लिकेशन दिल्ली, पृष्ठ संखया 200, 201।
[4] शुक्ल कमल कान्त, प्राचीन मालवा का ऐतिहासिक एवं कलागत अध्ययन, कला एवं धर्म शोध संस्थान सभापति भवन, नरिया, बी.एच.यू. 5, पृष्ठ संखया- 125 ।
[5] शुक्ल द्विजेन्द्रनाथ, प्रतिमा विज्ञान, वास्तुवाड्गमय प्रकाशन शाळा, लखनऊ, पृ.सं. 244, 336, 229 ।